"Om"

To
श्रीमान विपिन चन्द्र जी साहब
चेन्नै

From-
हरी प्रसाद पुरोहित
66 Warren Road
Mylapore
चन्नै - 600004

असाध्य रोगों का इलाज सिर्फ
खान-पान नियन्त्रण से ही सम्भव

महोदय,

यह मेरा खुद का अनुभव है कि एलोपेथी में जो रोग डॉक्टरों द्वारा ला-ईलाज बताये जाते है, उनका इलाज सिर्फ खान-पान के नियन्त्रण तथा रहन-सहन के तौर-तरीके पर नियन्त्रण से स्थाई तौर पर हो जाता है। जरूरत है तो सिर्फ एक अनुभवी परामर्शदाता की, जो उचित खान-पान तथा रहन-सहन के तौर-तरीके से सम्बन्धी समय-समय पर सही सलाह दे सके।

पिछले एक साल पहले से मेरे पैरो में खुजली के साथ लाल-लाल चकते निकलने शुरू होगये थे, जो धीरे-धीरे पूरे पैरो, हाथों यहां तक कि शरीर पर भी पूरी तरह फैल गये। खुजली भी पूरे शरीर में होने लगी।

बढ़ती बिमारी की गम्भीरता को देख कर मैं यहां ईशा-थियेटर के पास एक बढ़िया स्किन-स्पेशलिस्ट के पास गया। उसने एक-एक महिने के हिसाब से दवा देना तथा खूब पूरे-

शरीर पर लगाने का कोर्स शुरू किया। इससे पहले दो महीने तो काफी कन्ट्रोल होगया। लेकिन फिर खुजली व चकते बढ़ने शुरू होगये बिमारी का नाम नहीं बताया। तो आखिर डॉक्टर चैन्ज किया। इसबार यहां नारायण गुरुजी स्ट्रीट में एक डॉक्टर के पास गया जो कि सरकारी अस्पताल में स्किन डिपार्टमेन्ट का हैड भी था। उसके द्वारा दी गई दवाओं से पहले महिने कन्ट्रोल होने लग गया; तब अगले महिने दवा देते वक्त मुझे बताया कि यह बिमारी (Psorasis) सौराइसिस है, जिस का कोई भी परमानेन्ट इलाज किसी भी डाक्टर के पास नहीं है। दवाएं बराबर लेते रहोगे तो कन्ट्रोल में चलती रहेगी।

पिछली फरवरी 05 में मैं राजस्थान गया। वहां किसी के बताने पर कुरुक्षेत्र (हरियाणा) से आयुर्वेद की पुड़िया भी मंगवाई थी। लेकिन तब तक मेरा मन डॉक्टरी दवाओं से पूरा ऊब चुका था। राजस्थान से वापस आकर मैंने मेरे लड़के निरंजन के कहने पर यहां आपके पास आया। आयुर्वेद वाली पुड़िया लेना शुरू नहीं करने का निर्णय कर सिर्फ विपिन जी साहब के परामर्श से सिर्फ खाना-पीना में सुधार कर रोग दूर करने का निश्चय किया। जिसके फल स्वरूप मार्च 05 से लेकर आज तक जून 05 अन्त तक सौराइसिस (Psoraisis) जैसी असाध्य माने जाने वाली तथा हर समय खुजली से परेशान करनेवाली बिमारी से मेरा पूरा शरीर पूर्णतया मुक्त हो गया। इस के प्रमाण स्वरूप में मार्च 05 में-

- खींची गई फोटो तथा अभी जून 05 अन्त में खींची गई फोटो इस पत्र के साथ संलग्न कर रहा हूँ।

अब मैं इस दावे के साथ यह कह सकता हूँ कि सभी तरह के असाध्य रोगों से सिर्फ खाने-पीने तथा रहन-सहन पर नियन्त्रण रख कर पूर्ण तथा रोगमुक्त हुआ जा सकता है। इसमें कोई भी संशय नहीं है। और यह सब एक अनुभवी एवं उचित परामर्श दाता की देख रेख में ही सम्भव हो सकता है।

मैं आपका बहुत आभारी हूँ।

प्रेषक

Uppurohit

(हरी प्रसाद पुरोहित)

CHENNAI
7.7.05